

साहित्य

■ जाहिर खान

रवर्षा, भारतीय सिनेमा की वह अदकारा और सिंगर हैं, जिन्हें अपने जमाने में मलिका-ए-तरसूम और कौन ऑफ़ मेलोडी के नाम से खिताब दिया जाता था। नूरजहाँ जिनकी भारत में मकबूल हैं, उनकी ही पाकिस्तान में। बंटरों के बाद, वे पाकिस्तान चली गईं। और वहां भी वो अपनी आवाज़ को जादू चारों ओर बिखेरी रहीं। नूरजहाँ ने मुस्क फिल्मों में अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की और कुछ ही वर्षों में वे फिल्मी पद पर छह गईं। अदकारों के साथ उन्होंने गायकों भी कीं। 'खानदान', 'नीकर', 'जुगनू', 'दुहाई', 'जातन' और 'अनमोल पहरा' में गाये उनके गीत आज भी सुनाने पर जाते हैं। 'आज मेरी बंदाई मोहब्बत के सहो...' 'जब है मोहब्बत...' ने तो उस वक़्त पूरे मुल्क में धूम मचा दी थी। अरसा नूरजु गया, मगर वे गीत आज भी उसी तरह से मसरूर हैं।

अपने फिल्मी करियर में नूरजहाँ ने करीबन सत्र हजार गाने गाए। हिन्दी फिल्मों के अलावा उन्होंने पंजाबी, उर्दू, अरबी, बंगाली, पश्तो और सिंधी फिल्मों में भी अपनी आवाज से सामान्य की महशूर किया। 21 सितम्बर, 1926 को अलिवाल जिले के पंजाब के ओर से शाह कस्बू में जन्मी नूरजहाँ को बचपन से ही गीत-संगीत का शौक था। नूरजहाँ की अमो और बालिवुड में सब मुस्लिमों के जन्म उत्सव दोनवां दिनांक है, तो संगीत की तालीम का बचपन से ही एक भाग रहा। नूरजहाँ की तालीम ककनन बंद, तो सांस्कृतिक तालीम की तालीम उन्होंने उत्तराज गुलाम मोहम्मद तथा अरबाब खान गुलाम अली खां से ली। साल 1939 में आई फिल्म 'गुन-ए-बकालात' वह फिल्म थी, जिसमें उन्होंने सबसे पहले गाना गाया। इस फिल्म को कामयाबी के बाद नूरजहाँ फिल्म इंडस्ट्री में सुविर्धनी में आईं। साल 1942 में फिल्म 'खानदान' रिलीज हुई। इस फिल्म में भी उन्होंने अदकारों के साथ-साथ गाने भी गाए। फिल्म के साथ-साथ इसके गानों की सुर एटिचर हुई। फिल्म की कामयाबी

के बाद नूरजहाँ ने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक के बाद एक उनका कई सुपर हिट फिल्में आईं। जिसमें उन्होंने अपनी अदकारों और गायकों के हनुक को लोहा मनाया लिया। साल 1947 में बनी फिल्म 'मिन्ना-साहिबा' भारत में नूरजहाँ को आखिरी फिल्म थी। मुल्क की नूरजहाँ के बाद, लाला लोको के साथ उन्होंने भी पाकिस्तान में जाकर बने का सफ़ाया किया। उस वक़्त वे शांरहत को बुलादियां पर थीं। ऐसे में अपना सब कुछ छोड़कर जाया, वाकिई एक बड़ा फैसला था। लेकिन कुछ ही अरसे में पाकिस्तान में भी उन्होंने वही सब हासिल कर लिया। अदकारों के साथ गायकों दोनों ही वे सबसे तक उन्नत पर रहीं। पाकिस्तानी फिल्मों में नूरजहाँ के योगदान को देखते हुए, न सिर्फ़ उन्हें पाकिस्तान के पहले प्रेडियत सम्मान से नवाज़ा गया, बल्कि वहां के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'निता-ए-इमियान' से भी सम्मानित किया गया।

नूरजहाँ की गायकों और सुरीसों

अपने फिल्मी करियर में नूरजहाँ ने तर्फ़रिबन दस हजार गाने गाए। हिन्दी फिल्मों के अलावा उन्होंने पंजाबी, उर्दू, अरबी, बंगाली, पश्तो और सिंधी फिल्मों में भी अपनी आवाज से सामान्य की महशूर किया। 21 सितम्बर, 1926 को अलिवाल जिले के पंजाब के ओर से शाह कस्बू में जन्मी नूरजहाँ को बचपन से ही गीत-संगीत का शौक था। नूरजहाँ की अमो और बालिवुड में सब मुस्लिमों के जन्म उत्सव दोनवां दिनांक है, तो संगीत की तालीम का बचपन से ही एक भाग रहा। नूरजहाँ की तालीम ककनन बंद, तो सांस्कृतिक तालीम की तालीम उन्होंने उत्तराज गुलाम मोहम्मद तथा अरबाब खान गुलाम अली खां से ली। साल 1939 में आई फिल्म 'गुन-ए-बकालात' वह फिल्म थी, जिसमें उन्होंने सबसे पहले गाना गाया। इस फिल्म को कामयाबी के बाद नूरजहाँ फिल्म इंडस्ट्री में सुविर्धनी में आईं। साल 1942 में फिल्म 'खानदान' रिलीज हुई। इस फिल्म में भी उन्होंने अदकारों के साथ-साथ गाने भी गाए। फिल्म के साथ-साथ इसके गानों की सुर एटिचर हुई। फिल्म की कामयाबी

अवाज़ पर मसरूर शकसाना फिल्म समझते हसन मंते की फ़िल्म थे, इस हद तक कि उन्होंने नूरजहाँ की फ़िल्म-अवैज शरिफ़रनु पर एक शाहदार ख़ाका भी लिख था जो लिखते हैं, 'सहलग के बाद, मैं



नूरजहाँ की आवाज़ असें तक ज़िंदा रहेगी

एक पूर पर खड़ी रह सकती है, उसी तरह जिस तरह लाज़रस (माधुसूदन) के खड़े रहेंगे... मैं मेरी यही एक जागी, बलिहो अपने इस मरमान में मैं आदि लिखते हूँ... 'नूरजहाँ के मुस्लिमिक कर्म आपकी जानें हैं कि वह गरा विद्या उन्नी ही जानती है, जिसकी कि कोई उलतार है वह सारी जानी है, खुलना गाने है, श्रवण गाने है और ऐसे जानी है कि गाने का एक अमर करती है। मीनोकी को नाली तो उसने ककनन बालिल की थी कि वह ऐसे पराम में बना हुई, जब का माली ही ऐसा था-लेकिन एक चीज ख़ुदावार ही होती है। मीनोकी को इमर से किसी की सोना मारण (परिष्कार) के, मगर गले में रस न हो तो आप समझ सकते हैं कि ख़ाली-ख़ाली इमर सुनने और जब क्या अरक करसंगे-नूरजहाँ के इस सपन ही था और वह ख़ुदावार चीज थी, जो घंटी

महते हैं। यह दोनों क्यों मिल जाएं, तो क़यामत का बिना नाम लजिमी भी है। ('नूरजहाँ' किताबों 'सझाद हसन मंते' दलायत, प्रकाशक-राजकमल) के दूसरे बरस आला तदत पर फ़ैसला किया कि वह कायू-ए-आज़ना का जन्म-ए-विदात (पुरणवाधि) सकराती पर नमाना जाए। इस ज़िन् में पंजाब नूरनोसिंदी हॉल में एक महफ़िल-ए-मुसिकी तद्विब दी गई। जिसका प्रोग्राम रडिओ पाकिस्तान लाहौर से रिले करने का एहतिमाम किया गया था। इस शाम कुनिवसिंदी हॉल में मुल्क के नामर 'गुलुसरो' (गायकों) की आवाज किचा गया। मादत नूरजहाँ की मीनू नगी थीं। जब वो स्टैंज पर आईं, तो अहदर फ़ैज़ की नयम 'मुसुरे पहली किन्नी इरकन-ओ-एनकी शायरी की अहदर फ़ैज़ के किस तरह के मरज़िमान थे और वे फ़ैज़ और उनकी शायरी की किन्नी इरकन-ओ-एनकी समझ करती थीं, एक छोटे से हिस्से से जाना जा सकता है। इस किसम पर ककनन रडिओ से नम (प्रसारित) करने को

■ ए.एफ़ 'नजर'

जब गुज़ल को लखरू कता है तो लखरू बरसा है कि गुज़ल फ़िल्मों की आवाज़ पर ख़ुशी से बने किता उठे। सदाओं के कडौरी दरख़ौली पर लक्ष्मी के पद पड़ी हैं। गुज़ल पहली बर्हिश को जो सीधी बुझुप में जो नर्म ताँतों की दुमर्यादों की आखी आनंदर दे दिखरुप और गुज़रुमरुत बरा देती है।.....सुनते तो वे आर है कि वे सुन आते-आते ही आना है और एक उर्दू भी कम है। गुज़ल पाठक 'जिवा' का उदरक सिलख संहार... गुज़री से जिवा है। मैं दिहा गया वह बरक़तम डब काय दूरलित है कि वह इमनदार शाहर है और अपनी बुखियाँ और कमियाँ से बख़िरफ़ूज। गुज़ल पाठक 'जिवा' गुज़ल के शाहर है। गुज़ल शायरी में बान कता है और अख़बार उररत मूल में होना है और गुज़ल को जो बूरे बरस की रमर्या भी बुखरुती से रेश कता है। उनको गुज़रों में पहली नज़र में आकर्मिण शरीर थावन तबय-रचन और बखर्याँ की संरचना है। जिबामें भरणी संगीताय



चढ़ते पड़ते हैं एक लखरू-नरकू के उररक से मित्रते हैं, करुण आते हैं और साथ बखी मरने को मसरूर खाने हैं। पढ़ाई पूरी होने पर जब अरला होते हैं तो

सुभाष पाठक 'जिवा' गुज़ल के शाहर है। गुज़ल इशारे में बात कता है और अख़बार उररक मूल में होना है और गुज़ल को जो बूरे सच की तस्वीर भी ख़ुबसूरती से पेश करता है। उनको गुज़लों में पहली नज़र में आकर्मिण शरीर थावन तबय-रचन और बखर्याँ की संरचना है। जिबामें भरणी संगीताय अनुकूलता और कोमलता है। जो परंपरागत क्लासिक अन्वज से प्रेरित किन्तु इन्वजिटी है। अलददा रटिका का बख़ूबी गिबाह, कडी-कडी डग़डी शब्दों या रोमर्या के अरकनूज का ख़ुबसूरती से किचा गया इशारेगत पाठक को आलददित करता है। जिवा परिस्थितिक प्रश्नों के सझार है वह सझाद उनसे इमनकर गुज़लों और सझादिक सरोकर को सझादिक पाठक को आलददित करता है। दिहा धक़रने के गुज़लों में गुज़ले हुए महशूर होती है कि उनको अडिकाता गुज़लों में इमनकर भवनाओं की अडिखित है और प्रेम की समझ रूप से तद्विभर उमरती है कुछ इस प्रकार है कि कलिये के जमाने में उस के

अधिक के किदरत में सर्वाधिक इदर है उसके निजाम में जहाँ अन्वज प्रेम है तो आरु निजामों की अमन्या और अना परिशरी, आस्था और अमन्या, कर्मवाद और भावयदव का इदर है। यह उदरके पदम्य लो है। यहले इक लो चरगुप कद रहूँगे। या बर्याँ जमाने को वेरगुप कदिए, इमना के किदरत में सर्वाधिक कदिए। 'गुज़री से जिवा है' जो गुज़लों में भावनामकता चमकने-खुकता की ओर आसुर इदर है। बरों के पयम में न केवल विशिषता है, बल्कि तन्वी बरारी की भी बख़ूबी निभापण है। गुज़ल का हिंदी में आना आम और उदकेगीय पदना है जिबामें गुज़ल के मुस्लिमिक दुष्टि और विरम के अनेक पद बख़िरफ़ूज खोबर दिए हैं। मेरा मानना है कि शाहरी भभभारे से दो सेवक पर बुझे होतों हैं एक कि शाहर समज में रहता है और उससे गुमरिसर होता रहता है जिससे शाहरी भी गुमरिसर होतें हैं। दुर्स- जब शाहर अपनी शाहरी किसे दुर्स के साथ शेरय कता है, दूद चाहा है या चाहा है कि वह लोण पर अरस करे तो वह पूरे तरह सापनािक अमल होता है। रमरगुप ज़ुवरु है कि कोई शाहरी समज को नुकसान पहुँचाने वाली कदापि नही होती कि कोई शाहरी बेरहिन नही होती कि वह उदर में, कडौरी नही है या अरुणो में प्रकत नही है बल्कि इशारेग असीम होती है कि उमरें आना दखे के शाशरना एसीमेंदुस (कायब तबय) होते हैं।

अनुकूलता और कोमलता है, जो परंपरागत क्लासिक अन्वज से प्रेरित किन्तु इन्वजिटी है। अलददा रटिका का बख़ूबी गिबाह, कडी-कडी शब्दों या रोमर्या के अरकनूज का ख़ुबसूरती से किचा गया इशारेगत पाठक को आलददित करता है। जिवा परिस्थितिक प्रश्नों के सझार है वह सझाद उनसे इमनकर गुज़लों और सझादिक सरोकर को सझादिक पाठक को आलददित करता है। दिहा धक़रने के गुज़लों में गुज़ले हुए महशूर होती है कि उनको अडिकाता गुज़लों में इमनकर भवनाओं की अडिखित है और प्रेम की समझ रूप से तद्विभर उमरती है कुछ इस प्रकार है कि कलिये के जमाने में उस के

दिलों में इसीमे खदिए लिए अपने-अपने रयालों पर गुमननु हो जता है। न कोई गिबा-शिखरक न दोबाग मित्रते के दोनो जानते हैं कि वे दोबाग कतों नही लिख सकेगे और दोनो ने इस सच को सोबीधी कर लिख है। वरल या जो मीनो की कतों में हैं या कभी पूरे न होना नहीं तमना है। अशिख और श्वाकू दोनों उन्नुनर के अरते मरथरयके दोनो निपरति शेरों पर खड़े हैं। प्रेम इन्नुनर अब उररक हिंद है, इस प्रेम कडौरी में बरन या हासलत के लिख कडौरी 'कडौरी नही है। दोनोवां भी मैं वह लेहा और हिंदर के दयान नही छोडेग। श्वाकू महशूर, बरक़त, बेवशरह, वदयाम और आसिक के गुम से नवाकिए है।

लेखिका - ए.एफ़ 'नजर'
गुज़ल - 'तुम्हीं से जिवा है' (गुज़ल संहार)
मुस्लिम - सुभाष पाठक 'जिवा'
समीक्षक - ए.एफ़ 'नजर'
प्रकाशक - अंधिध प्रकाशन
मूल्य 300

आधुनिक काव्य के मानकों के मरदेनरपर गुज़ल करे तो हय पाते हैं कि जिवा की शायरी पर अलिददव व अन्य आधुनिक चिन्तनों का काव्यक प्रभाव है और सपनालोलिता कायिक तो तमाम प्रवृत्तियाँ कमोशर उदकें यहाँ पाई जाती

है। मिगल के तौर पर कुछ अरशर आरु वही को बिभिर प्रवृत्तियों के र्हात्म है। इमर ही है तो अनापना है, पर कडी कत तो और का होना। सय गुज़ल के मेरे सोने में, यह उदके पदम्य लो है। आरुमामें कतों को बान होना, ये पड़ो हो पड़ो की बान नही, बरन पैहम उदरत है ही। गुमों दिरे हवाँ दिरे हवाँ के बरर हो पाँव अरव तो, नरर मेरे गुमों की भी समनर हो पाँ अरव तो।

वो गंगा दये ददर दित इर से आशिख, किच अरद दयक आँव को नय नही है। जिवा को गुज़लों में गुम किथिप है, लगना है गुमों की गहरा रने दूर तक फेजा हुआ है और वो उसे भारूप जोते हैं, शालीनता से अधिबधक करतें हैं, अपने परिशर को यकायक बदर देने की जल्दों में नही हैं। इरका एक कागप नरह भी हो सकता है कि जो इरस कर को आलसकर कर चुके हैं कि गुम बिचुरी का अरिभ हिररिग है और यह बरत वात है। यवो आदने से मिगल और सुद को निशरो सोचते तुमरी से मिगल है।

थकन को उठारो न हो सकते के शारो वरपन के सिशारो तुमरी से जिवा है। जिवा गुज़ल में पापरमिकता और कतिना को आधुनिकता और उरर आधुनिकता किन किनता अरवा किन विशिष्टताओं के साथ निभाए कि सकें हैं यह अरस विवरर है किविक उदके बरत एक बय सपनरता के कता सजसती है कि जो गुज़ल को उमरति हैं और उनको अगने के सपर के लिए में शारिक मंगकामनार्पण पेश करता है।

■ रमेश शर्मा

गोबरों के आते ही कविगं, गांधी की पारिवी में कविगं की नई पीढ़ी तैयार होने लगती है। यह बहू-मन्य होना है सब इतने निरमिर्त बरने लगती है। मीसम के अन्वप कविगं की यह नई उरव लगताए अपने लिए नुवी अरसरों जहाँ की सलाम में भी सारी हुई दिखने पड़ती है। ये टोनी प्रविषता भी य रहते है कि कवि से कौनो बुढवा आओ जो बहो पदों लुगवने पर पीरो टोनी बहो उरर जाती है। कविता को फुलझरियाँ को तरह छोडेगा उरर सलम होना है। सुब किथिप करत एक ही पंक्ति को बय योराते हुए इदर गुन या सजना है कडौरी बरन कतिना को रमग एह पंक्ति को बरतु तब आरवा में किमी आर्या की तरह शीतोओं को सपनाने की कतिना करत हू। वो इदरें मंग पर देजा का सकता है।

रय्याँ अपने शीतोओं से नाली बराने का आसुर करत हू। पी उररें कौनो कविगं करत हू। कविता को फुलझरियाँ को तरह छोडेगा उरर सलम होना है। सुब किथिप करत एक ही पंक्ति को बय योराते हुए इदर गुन या सजना है कडौरी बरन कतिना को रमग एह पंक्ति को बरतु तब आरवा में किमी आर्या की तरह शीतोओं को सपनाने की कतिना करत हू। वो इदरें मंग पर देजा का सकता है।

कविता के नाम पर आई हुई जोताओं की पीढ़ उरर अपने अरपने अरपने को लोटती है तो वैचारिकों के नाम पर अपने साथ बहू लेकर उरर जाती है। मंग के नुचे शीतोओं की पीढ़ पूनी हुए गुमरुगरे के बीज गटके उरर उदके किथिपों का डेर पर बहो छोरे जाते हैं (नासमो को बयने के लिए मंथीय कतिना को कविता के विशर लोकारिप बनने का माध्यम सझा जाते है दहासल उय कतिना में वैचारिकों के नाम पर कुछ भी नही होता है कतिना के नाम पर छोड़ी या फुलझरियाँ पर होतो हैं जब जोता वैचारिकों के लिए कौनो रयेस नही रह जाता है। ये शकिक मरनेअरन के लिए पर होतो हैं, यह भी सकने लिए नही। दुग्मिय से इसे ही कविता मलम लिए आते को प्रुल किथिप के कागप कतिना को बयन है उररका कथर निररर हुआ है और यह शरर दिसें कि आरु तनेो से हो रहा है। कविता के कायवरीयों, मंथीय पहडुहा और कविद्वी में रवी पाकी तथकाथिक कविता के पश में यह एक दिचा जाता है कि ऐसे कविताओं के

स्वयंभू कविगं की नई फौज कविता की अनुपस्थिति

कविगं को लार्खो रमये का पेंकेव देकर लोहा गिरर मुने बुनते हैं। दरअरल बयानु की आंठों से बय आरवा, साहित्य को आनेकी कतिना करतें हैं और वे फ़ैज़ और उनकी शायरी की अहदर फ़ैज़ के किस तरह के मरज़िमान थे और वे फ़ैज़ और उनकी शायरी की किन्नी इरकन-ओ-एनकी समझ करती थीं, एक छोटे से हिस्से से जाना जा सकता है। इस किसम पर ककनन रडिओ से नम (प्रसारित) करने को

जिनती भी कोरिशर करे, गांधी की वैचारिकों या गांधी के जीवन मूल्य आरु भी कोरती हैं। (ररका आलरन बयारु की भी नही कर सकता। वैचारिक कविता और मंथीय कतिना के सम्य्ह में कविता बय नमाने जाती है। कताओ को साहित्य को बयार की आंठों से देनने वाला कविता की वैचारिकों से कोसों दूर होतें। यह से समझ नही सकना जिवा शरह कि गांधी को लोग समझ नही पाते हरेसे भी कमी हैं। ररका कि एक तर्फ एक प्रसिद्ध कवयित्री नयाना का नयु हो और दूसरी तर्फ अरदम उररर ररहा दिचा जाए तो बयानु और पीढ़ का कथ अरदम की तर्फ हो होना। पर क्या उससे कवयित्री से वैचारिकता नयु कता का मुल्क येसे वैचारिकता नयु कता का मुल्क क्या हो यारगा? यह शररन सत है कि जो मूल्यवान है, उसको अमरता अकुणन है। बयार की आंठों से देखकर कोई नासमझी का परिचय दे तो फिर वह उसकी समरना है।



परिवर्तन
यात्रा

अऊ नहीं सहिबो बदल के रहिबो, भाजपा ने मरी हुंकार



भा.प्र.म. की सरकार आगेगी तो छत्तीसगढ़ में भी योगी का बुलंदगढ़ चलीगा। छत्तीसगढ़ कानून व्यवस्था का राज, सुशासन का राज, खुशी का राज होगा।

भाजपा की सरकार आगेगी तो छत्तीसगढ़ में भी योगी का बुलंदगढ़ चलीगा। छत्तीसगढ़ कानून व्यवस्था का राज, सुशासन का राज, खुशी का राज होगा।

ओड़िशा से चोरी कर ले जा रहे
श्रे पद्मपाणि प्रतिमा, तीन धरे गए



इसके पहले भाजपा प्रत्यागी शंभू दास ने कहा कि प्रथममंत्री नरेंद्र मोदी ने नरवि विमान के बंद कर परोसा जाता है। मैं आकाश बाई देहूं।

महासचिव, 23 सितम्बर (देशबन्धु)। ओड़िशा के आंगन के पास एक प्रसिद्धताओं के मुर्तियों चोरी कर एनपी जी आ रहे तीन प्रांतिक पुलिस के कब्जे रहे।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल दोनो हाथ से प्रदेश की गरीबी को लूटने का काम कर रहे : अरुण साह
छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल को प्रदेश के विकास के लिए चुनाव था लेकिन बघेल गेड़ो और भीरा चलाया दिखावे में लगे

मुख्यमंत्री आज कोण्डागांव को देंगे 403 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात

रायपुर, 23 सितम्बर (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल 24 सितम्बर को कोण्डागांव जिले के प्रवास पर रहेंगे। इस दौरान वे कृषिनिर्माण सह स्टैंड, सेंट्रल लाइब्रेरी, आदिवासी विकास धारा सहित विभिन्न कर्मों का शोकांशिक करीब 40 करोड़ रुपये की 403-408 करोड़ रुपये के 6108 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

तक 26 करोड़ 04 लाख रुपये की लागत से पूरा पुलिसवा सहित बनेली सड़क, 24.23 करोड़ रुपये की लागत से 18 प्राथमिक विद्यालयों में जल जोड़ना मिशन अंतर्गत निर्मित बनेली जल सार प्रदान

पत्र, रोजगार विभाग द्वारा आयोजित पोस्टमेंट केर्षों के माध्यम से विभिन्न संस्थाओं के लिए खोजी न्युआओं को नियुक्त पर चर्चा विचार, रोजगार मिशन अंतर्गत विचारणीय के माध्यम से खोजी न्युआ के 193 युवाओं को नियुक्ति प्रदान किया।

ट्रेन से कटक सुवक की मौत

बागबाहरा, 23 सितम्बर (देशबन्धु)। रेलवे स्टेशन बागबाहरा के प्लेटफॉर्म नंबर 1 के पटरों में ट्रेन में कटने से नगर के एक सुवक की मौत हो गई। बागबाहरा पुलिस ने रेलवे कर्मचारियों की सूचना पर थाने में मर्ग कायम कर जांच में लिया गया है।

पुलिस मुर्तियों को 2024 में लेना रखकर सात धरे के अंतरिक्षवादी श्रे पद्मपाणि के साथ ओड़िशा के ओर से एक सफेद रंग की मालती स्वीफकार को चोरी कर ले जा रहे थे। पुलिस मुर्तियों को 2024 में लेना रखकर सात धरे के अंतरिक्षवादी श्रे पद्मपाणि के साथ ओड़िशा के ओर से एक सफेद रंग की मालती स्वीफकार को चोरी कर ले जा रहे थे।

नवनिर्मित हरा रेलवे स्टेशन लाइब्रेरी, आदिवासी विकास धारा सहित विभिन्न कर्मों का शोकांशिक करीब 40 करोड़ रुपये की 403-408 करोड़ रुपये के 6108 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

इसी तरह मुख्यमंत्री बघेल 'मुख्यमंत्री श्रुष संघ योजना' के तहत कोण्डागांव वन मंडल के 681 विद्यार्थियों को टिफ्ट्यूल्स वन, सामान एवं क्लोथल नौगरीय के पीपरामोड 61 लाख 60 हजार रूपए का अनुदान, विद्यार्थी छात्र लड़कियों के विकास उत्तरांचल राज्य सरकार के 20 प्रतिशत लाभोशज के तहत पर 44 वन प्रबंधन समितियों को 12 करोड़ 45 लाख रूपए का विकास प्रदान करेंगे।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कार्यक्रम में मां देवीधरी भाबा प्रोसिंगिंग कर्मों के माध्यम से मज्जा कोण्डागांव जिले के ग्राम कोकोट्टी में 140.67 करोड़ रुपये की प्रकाश व्यवस्था हेतु 03 करोड़ 72 लाख रूपये लागत से लाने वाले सोलर हॉट लाइट स्थापना कार्य, धनोरांग 03 करोड़ 44 लाख रूपये की लागत से निर्मित होने वाला आई.टी.आई भवन एवं 01 करोड़ 91 लाख रूपये की लागत से बने जलला आई.टी.आई छात्रावास विभाग शासन है।

मुख्यमंत्री कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ विभाग में विभिन्न 61 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र, राजस्व विभाग में विभिन्न 15 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्रों का शोकांशिक कर करीब 40 करोड़ रुपये की 403-408 करोड़ रुपये के 6108 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

गुलझर के जंगल में आदिवासी पति-पत्नी की लाश मिलने से गांव में फैली सनसनी

बागबाहरा, 23 सितम्बर (देशबन्धु)। क्षेत्र के ग्राम पंचायत भोधा के आश्रित वनांचल ग्राम गुलझर के जंगल में आज शनिवार 23 सितम्बर को अपरान्ह 12 बजे आदिवासी पति-पत्नी की लाश मिलने से गांव में सनसनी फैल गई। दोनों की लाश गांव के जंगल में फूली गई।

बागबाहरा धाना प्रभारी मोहरा साह ने बताया कि ग्राम पंचायत भोधा के आश्रित वनांचल ग्राम गुलझर के जंगल में आज शनिवार 23 सितम्बर को अपरान्ह 12 बजे जंगल ग्रामायोगों ने गांव की आदिवासी मुक्तिा श्रीमती लक्ष्मी बाई कुमार 40 वर्ष पति भाऊ राम कुमार एवं उसके मुवक पति भाऊ राम कुमार की लाश को जंगल में मृत अवस्था में पड़े हुए देखा।

सिवरक को सुबह 08:30 बजे से घर पर निगम बनाए कहीं चले गए थे। जिसकी खोजनिगर पर एवं गांव वालों द्वारा लगातार किया जा रहा था। इसी खोजनिगर के दौरान गांव के कुछ लोग लक्ष्मी बाई जंगल को ओर गए थे। ग्रामायोगों ने ऊक्त आदिवासी पति-पत्नी की लाश मिलने की अपरान्ह 12 बजे नृत अवस्था में जंगल में पड़े हुए देखा।

माननीय मुख्यमंत्री छ.ग.शासन भूपेश बघेल जी का कोण्डागांव की पाठन धरा में स्वागत वंदन अभिनंदन...



मेरी माती मेरा देश कार्यक्रम में स्वतंत्रता आंदोलन के शहीदों को किचा जाएगा याद

रायपुर, 23 सितम्बर (देशबन्धु)। भारत में स्वतंत्रता को लड़ने में शहीद हुए गुमानन नयकों एवं शहीदों को ब्रह्मसिंह देव और विद्यार्थियों को बरे वीरों के जीवन से परिचित करने के उद्देश्य से राज्य के प्रथम स्कूलों में 'मेरीमाथा एवं मेरी माती मेरा देश' से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

मुख्यमंत्री कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ विभाग में विभिन्न 61 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र, राजस्व विभाग में विभिन्न 15 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्रों का शोकांशिक कर करीब 40 करोड़ रुपये की 403-408 करोड़ रुपये के 6108 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

मुख्यमंत्री कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ विभाग में विभिन्न 61 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र, राजस्व विभाग में विभिन्न 15 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्रों का शोकांशिक कर करीब 40 करोड़ रुपये की 403-408 करोड़ रुपये के 6108 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कार्यक्रम में मां देवीधरी भाबा प्रोसिंगिंग कर्मों के माध्यम से मज्जा कोण्डागांव जिले के ग्राम कोकोट्टी में 140.67 करोड़ रुपये की प्रकाश व्यवस्था हेतु 03 करोड़ 72 लाख रूपये लागत से लाने वाले सोलर हॉट लाइट स्थापना कार्य, धनोरांग 03 करोड़ 44 लाख रूपये की लागत से निर्मित होने वाला आई.टी.आई भवन एवं 01 करोड़ 91 लाख रूपये की लागत से बने जलला आई.टी.आई छात्रावास विभाग शासन है।

मुख्यमंत्री कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ विभाग में विभिन्न 61 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र, राजस्व विभाग में विभिन्न 15 निर्माण कार्य पर नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्रों का शोकांशिक कर करीब 40 करोड़ रुपये की 403-408 करोड़ रुपये के 6108 विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।



टीयर: वेलोडान का विरोधी शब्द है क्या है ?
रूढ़ि- वारदादन
टीयर- कैरे
रूढ़ि- वेलोडान में दो व्यक्तिक कर बैठते हैं।
और वारदादन में दूर-दूर।

प्रादेशिकी

जगदलपुर-ककिर-काण्डगाम-बीजापुर-देतेवाड़ा

बकाया राशि जमा नहीं करने पर संजय बाजार की 4 दुकानों को किया गया सील



जगदलपुर, 23 सितंबर (देराबाय)। आयुक्त हरम मंडवी के निर्देश पर नगर निगम र.। जसुर विभाग के द्वारा दुकानों की धोप विक्रय राशि जमा नहीं करने वाले दुकानदारों पर लगातार कार्रवाई किया जा रहा है जिसके तहत शनिवार को संजय बाजार में चार दुकानदारों को जिन्होंने लगातार नोटिस देने के पश्चात भी धोप विक्रय राशि जमा नहीं करने पर निगम राजस्व विभाग के द्वारा दुकान सील करने के कार्रवाई किया गया। निगम दुकान सील करने का निर्देश है दुकानों का बकाया राशि नहीं पढ़ने वाले दुकानदारों में सड़क पत्र भेजा हुआ है। संजय बाजार में जमा दुकानों की सील किया गया जिसमें मीना कुमारी दुकान नंबर बाय 18, रश्मा बानो दुकान नंबर बी 1, नरसिं बानो दुकान नंबर सी 2, विजय

नाहटा दुकान नंबर 22, कुल चार दुकानदारों ने बर सों से धोप विक्रय राशि नहीं पढ़ाया। निगम राजस्व विभाग के द्वारा। स बंधित दुकानदारों को अंतिम नोटिस जारी किया गया था। राशि नहीं पढ़ने वाले चार दुकानदारों को अंतिम नोटिस जारी किया गया था। इसके पश्चात आज सील करने की कार्रवाई किया गया तथा आगामी 26 सितंबर तक राशि जमा नहीं करने पर उक्त चारों दुकान को निरल करके हूए उरको राशि जमात कर दे जायेगी।

ज्ञात हो कि आयुक्त हरम मंडवी विभाग की लगातार अख्तियार सखती एवं दुकानों को बकाया राशि व किराए राशि के संबंध में समीचीन कर कार्रवाई के लिए सखती कर रहे हैं। आयुक्त श्री मंडवी के द्वारा लगातार >>> [श्रेष्ठ पृष्ठ 9 पर](#)

आयुक्त के इस कार्रवाई से बकाएदारों में मचा हड़कंप

ताड़मेटला कथित फर्जी मुठभेड़ के विरोध में सर्व आदिवासी समाज ने किया जिला बंद, बंद का व्यापक असर

सुकमा, 23 सितंबर (देराबाय)। ताड़मेटला पुलिस नक्सली मुठभेड़ में मारे गए पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाने की मांग को लेकर सर्व आदिवासी समाज के द्वारा शनिवार को एक दिवसीय सुकमा जिला बंद का आवाहन किया था, सुबह से ही सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहने। जिले भर में बंद का व्यापक असर देखने को मिलता।



ज्ञात हो कि 5 सितंबर को ताड़मेटला पुलिस नक्सली मुठभेड़ दो लोगों को पुलिस में इन घरे में मारे गिराया था। इन्होंने इस मुठभेड़ के बाद से ही विवाह रथा हुआ है। वहीं ग्रामीणों का आरोप है कि हुमनेड़ में मारे गए दोनों लोग ताड़मेटला गांव के ग्रामीण हैं। इस घटना की बाद से जिले भर में आदिवासी समाज एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के द्वारा लगातार इस घटना की निंदा करते हुए विरोध किया जा रहा है। सर्व आदिवासी समाज के द्वारा भी इस घटना को लेकर धरना प्रदर्शन और रैली निकालकर जमान सौंप चुके हैं तो, वहीं शनिवार को एकदिवसीय बंद व धरना प्रदर्शन करते हुए पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाने की मांग की गई। इस घटना को उच्च स्तरीय न्यायिक जांच कर दीजिये पर कार्रवाई करने की मांग है। हमारा मांग है कि इस घटना को उच्च स्तरीय जांच हो और दीर्घांच पर कार्रवाई कर के वाई की जाए। उन्होंने ने कहा कि इससे पूर्व में भी सुकमा एवं बस्तर के अंदर इस तरह के फर्जी मुठभेड़ हुए हैं हमारा मांग है कि इस प्रकार के फर्जी मुठभेड़ बंद किया जाए। कोया कुटुमा समाज के जिला अध्यक्ष विष्णु कवासी ने कहा कि इस मुठभेड़ में मारे गए पीड़ित परिवार एवं घटनास्थल जाने के लिए सर्व आदिवासी समाज का दल को जाने नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम अपने सगे संबंधियों से भी मिलने के लिए जाने नहीं दिया जाना यह कहां का न्याय है। यह मुठभेड़ पूरी तरह से फर्जी मुठभेड़ है क्योंकि दोनों युवा गांव में ही रहकर किसान दुकान का व्यवसाय एवं ड्रेक्टर व खेती बंदी करके अपना जीवन यापन करते थे। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के एक दिवसीय जिला बंद कर धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम सरकार से मांग करते हैं कि इस घटना को उच्च स्तरीय जांच की जाए और जांच के बाद दीर्घांच पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि कोई कार्रवाई नहीं करती है, तो आने वाले समय को सर्व आदिवासी समाज के द्वारा उच्च आंदोलन करने के लिए जायज होगा।

मुठभेड़ की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच करने की मांग, सरकार इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं करेगी तो उग्र आंदोलन की भी चेतावनी

सड़क के अभाव में कॉलोनीवासियों ग्राम पंचायत भवन की हालत जर्जर को आवागमन में हो रही परेशानी

बारिशा के चलते हुए कीचड़ और फिसलन से दो पहिया वाहन चालक हो रहे दुर्घटना के शिकार

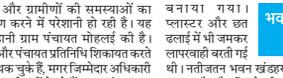


जगदलपुर, 23 सितंबर (देराबाय)। नगर निगम क्षेत्र के छत्रपति शिवाजी बावड़ में स्थित पुलिस विभाग के आवासीय कॉलोनी में सड़क निर्माण नहीं होने से लोगों को आवागमन में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। विशेष कर बारिश के दिनों में सड़क पूरी तरह से कीचड़ से ढक जाता है। फिसलन को बहाव से दो पहिया वाहन चालक गिराकर दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं। इस कॉलोनी में लगभग 700 चरबे

हूए हैं जिसमें बाईं हजारा से अधिक लोग रहते हैं वहीं इस कॉलोनी के पीछे पुरानी बस्ती भी है वे लोग भी इसी सड़क से आना-जाना करते हैं। इसके बावजूद सरकार और प्रशासन के

द्वारा सड़क निर्माण के प्रति उदासीनता के चलते लोगों में नारागीनी बढ रही है। भारतीय जनता पार्टी शासनकाल में यह कॉलोनी का निर्माण हुआ आ। लगभग 5 वर्षों से इस कॉलोनी में लोग रह रहे हैं। कॉलोनी के रह बासियों ने बताया कि 5 वर्ष भी जाने के बाद भी सड़क निर्माण का कार्य अब तक नहीं हुआ है और राष्ट्रीय राजमार्ग से कॉलोनी पहुंच मार्ग भी नहीं बना है और न ही कॉलोनी के अंदर सड़कों का निर्माण किया गया है। संदर्भ के नहीं करने से आवागमन में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। साइलेंट को पीछे पावना वाक्य गिराकर दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं। वहीं कॉलोनी पहुंच मार्ग >>> [श्रेष्ठ पृष्ठ 9 पर](#)

जगदलपुर पंचायत भवन की हालत जर्जर के मौसम में इस भवन के अंदर पानी भर भी बैठा नहीं जा सकता।



जगदलपुर, 23 सितंबर (देराबाय)। वर्षों पुराने ग्राम पंचायत भवन की हालत काफी जर्जर हो गई है। पंचायत भवन का निर्माण करके और ग्रामभवा बैठक का आयोजन बाहर 'खू लें आसमान का चमक पड़ रहा है। ऐसे हालत में गांव का विकास और ग्रामीणों को समस्याओं का निराकरण करने में परेशानी हो रही है। यह ग्राम कहानी ग्राम पंचायत मोहल्ले की है। ग्रामीण और पंचायत प्रतिनिधि शिकायत करते - करते अक चुके हैं, मगर जिम्मेदार अधिकारी कोई ध्यान ही नहीं दे रहे हैं। बकवास जल्द अंतर्गत ग्राम पंचायत मोहल्ले का पंचायत भवन पूरी तरह से जर्जर हो चुका है। यह भवन दहन करके हलका बना था। निर्माण के समय न कंट्रोल खड़ा किया गया, न ही नींव को मजबूत

किया गया। प्लास्टर और छत ढलाई में भी जमकर लालचवाही बतली गई थी। नतीजतन भवन खंडहर में तब्दील होता जा रहा है और किलने भी लगा है। पंचायत भवन को छत और दीवारों का प्लास्टर उखड़ रहा है, छत को हड्डे बाहर निकल आते हैं। दरकी हुई छत से सरसात का पानी टपकता है और दीवारों में सिलन भी आ जाती है। बारिश

के मौसम में इस भवन के अंदर पानी भर भी बैठा नहीं जा सकता। जव सरसात हो रही होती है, तब ग्राम पंचायत व ग्रामभवा की बैठक किसी अन्य जगह पर आयोजित करनी पड़ती है। सूखे मौसम में भी पंचायत भवन के अंदर बैठक ग्राम पंचायत का कामकाज निपटारा आसन काम नहीं होता। खतरों का साया हर परल मंडोला रहता है। भवन कब धराशायी हो जाए, कहा नहीं जा सकता। इस जर के कारण ग्राम पंचायत के सरपंच, पंच और कुर्मवारी वहां परसेन को शासन नहीं उठता पाते। परंपरि पंचे सरपंच और कर्मवारी ग्रामीणों के सरों के आंगन में बैठकर सरा काय निपटते हैं। ऐसे में अंतजाल लराया जा सकता है कि पंचायत के मुनादे >>> [श्रेष्ठ पृष्ठ 9 पर](#)

शबरी की पावन धरा में विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण
भूमिपूजन में पधारें छ.ग. प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री
मान. श्री भूपेश बघेल जी
स्वागत... का
वंदन...
अभिनंदन...

विनीत
जिला कांग्रेस कमेटी सुकमा
समस्त कार्यकर्तागण सुकमा-कौंटा

कैपिटल जॉन



पूरे नहीं किए घोषणापत्र के वादे; राहुल, सिंहदेव सहित 13 के खिलाफ परिवार दायर

रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) विधानसभा चुनाव 2019 के घोषणापत्र में किए गए वादों को पूरा नहीं करने पर अधिकतर आलोचनाओं में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इन 13 उपायों के निर्वाह को एकमात्र उपाय-विनाशकारी घोषणापत्र प्रथम 80 दिनों में पूरा करने का वादा किया था।

उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -
- उपरोक्त 13 घोषणापत्र में शामिल थे -

सरकार के खिलाफ संविदा कर्मचारियों का अनूठा प्रदर्शन, निभाई शादी कर्मों



रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) प्रदेश के संविदा कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ कर्मों को खोज दिया है। प्रदर्शन को जना प्रमुख स्वयं सेवक संघ के अध्यक्ष जे.के. सिद्धार्थ ने बताया कि संविदा कर्मचारियों को वेतन वृद्धि का वादा नहीं किया गया है।

प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ कर्मों को खोज दिया है। प्रदर्शन को जना प्रमुख स्वयं सेवक संघ के अध्यक्ष जे.के. सिद्धार्थ ने बताया कि संविदा कर्मचारियों को वेतन वृद्धि का वादा नहीं किया गया है।

■ नियमितिकरण की मांग को लेकर आज

■ सरकार के वादों की भारत निकालेंगे

ने कोई नियम नहीं लिया है इसलिए हम आंदोलन करने पर मजबूर हैं।

27 प्रतिशत वेतन वृद्धि का नहीं मिल रहा लम्ब-कोशाय विचारों ने कहा मजदूरों ने संविदा कर्मचारियों के 27 प्रतिशत वेतन वृद्धि की घोषणा की थी। लेकिन मजदूरों से 5000 कर्मचारियों को ही उसका लाभ मिला था।

बाको सभी संविदा कर्मचारियों इस्का लाभ नहीं मिल पाया है। संविदा कर्मचारियों को वेतन भी नहीं रक रही है। जिसके कारण प्रदेश के संविदा कर्मचारियों का आंदोलन है।

आईएस अर्वाइ के लिए प्रदेश में दो साल से नहीं हुई डीपीसी

रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) राज्य प्रशासन में वित्त वही आईएस अर्वाइ के लिए डीपीसी नहीं रही है। वही एसीएस प्रशासन का प्रशासन भी विभागों में मुख्यालय में (एसीएस) शामिल है। इस तरह के पदों का नियंत्रण के एएसएस अर्वाइ प्रशासन से बचाने में वही राज्य प्रशासन में अमरको की कमी नहीं हुई है।

छत्तीसगढ़ के लोगों ने परिवर्तन का मन बना लिया है : केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल

रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) भाजपा के केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल ने कहा है कि छत्तीसगढ़ के लोगों ने परिवर्तन का मन बना लिया है। केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल ने कहा है कि छत्तीसगढ़ के लोगों ने परिवर्तन का मन बना लिया है।

महिला आरक्षण कब लागू होगा किसी को पता नहीं : दीपक बैज



रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि आरक्षण का संघर्ष अब किसी महिलाओं के लिए शुरू नहीं रहा है और हर उपाय मांग रही है।

■ आरक्षण बिल महिलाओं के साथ धोखा

गणेश को जलना को देखकर मोदी जी परेशान हो गए। इसलिए फिर इतिहास बनाते हुए कांग्रेस ने आरक्षण बिल को लाने का फैसला किया है।

अगले माह से जैसलमेर-दुर्गापर के लिए विमान सेवा

रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) आगले महीने अक्टूबर से हवाई यात्रियों को रायपुर से जैसलमेर व दुर्गापर शहर के लिए भी सीमाना मिलने वाला है।

रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) रायपुर शहर के लिए भी सीमाना मिलने वाला है।

ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ को मिला एक और राष्ट्रीय पुरस्कार

रायपुर, 23 सितंबर (देखासूचना) छत्तीसगढ़ राज्य सरकार को ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ को मिला एक और राष्ट्रीय पुरस्कार

ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ को मिला एक और राष्ट्रीय पुरस्कार

ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ को मिला एक और राष्ट्रीय पुरस्कार

